ओमप्रकाश वाल्मीकि

ओमप्रकाश वाल्मीकि का जन्म 30 जून, 1950 को उत्तर प्रदेश के जिला मुजफ्फरनगर के गांव बरला में हुआ था। वे एक मंजे हुए अभिनेता और निर्देशक भी थे। भारत के दलित साहित्य की महानायकत्व छवि में जिन साहित्यकारों को गिना जाता है, उनमें वाल्मीकि भी एक थे। उन्होंने लगभग साठ नाटकों में अभिनय किया और अनेक नाटकों का निर्देशन भी किया। उनकी पत्नी भी नाटकों में भूमिकाएं निभाती थी।

वाल्मीकि पर प्रेमचंद के दलित लेखन का गहरा प्रभाव था। उनका कहना था कि "प्रेमचंद का अध्ययन करना दलित ही नहीं बल्कि प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जरूरी है, जो साहित्य को मनुष्य की चिंताओं के लिए जरूरी मानता है।" मेरे लिखने का कारण लेख में उन्होंने कहा है, "हजारों सालों की घुटन, अंधेरे में गूंजती चीत्कारों और भीषण यातनाओं से मुक्त होने का प्रयास ही दलित सृजन के रूप में सामने आया है।" जूठन नाम से उनकी आत्मकथा आने से पहले ही पत्रिकाओं में, विशेषकर हंस में, छपने लगे थे। इसमें उन्होंने दलित जीवन की यातना और बेबसी को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विमर्श का मुद्दा बना दिया।

ओमप्रकाश वाल्मीकि के तीन कविता संग्रह- सदियों का संताप, बस बहुत हो चुका, अब और नहीं प्रकाशित हुए। उनके तीन कहानी संग्रह भी हैं - सलाम, घुसपैठिए और छतरी। उनकी पुस्तक दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र हिंदी दलित आलोचना का स्थान बिंदु मानी जाती है। अन्य पुस्तक "मुख्यधारा और दलित साहित्य" तथा दूसरी पुस्तक "दलित साहित्य अनुभव, संघर्ष और यथार्थ" उनके आलोचना संबंधी चिंतन का विकास कही जा सकती है। उन्होंने सफाई देवता शीर्षक से वाल्मीकि समाज का इतिहास प्रस्तुत किया है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री कांचा इलैया की पुस्तक "वाई आय एम नॉट अ हिंदू" का हिंदी अनुवाद "क्यों मैं हिंदू नहीं हूं" शीर्षक से किया।